Sonam Sula
Assistant Professor (Guest Faculty)
Dept. of Geography
A.N.D. College, Shahpur Patory, Samastipur

2nd Feb 2022
Wednesday

For B.A. - II (Hons)
Paper - III, Geography of India & Bihar

Lecture - 27

Scanned with CamScanner

UNIT - 1

RETREAT OF MONSOON
मानसून के निवर्तन की ऋतु

अक्टूबर और नवंबर के महीनों को मानसून के निवर्तन की ऋतु कहा जाता है। सितंबर के अंत में सूर्य के दक्षिणायन होने की स्थिति में गंगा के मैदान पर स्थित निम्न वायुदाब की द्रोणी भी दक्षिण की ओर खिसकना आरंभ कर देती है। इससे दक्षिण - पश्चिमी मानसून कमजोर पड़ने लगता है। मानसून सितंबर के पहले सप्ताह में पश्चिमी राजस्थान से लौटता है। इस महीने के अंत तक मानसून राजस्थान, गुजरात, प० गंगा मैदान तथा मध्यवर्ती उच्चभूमियों से लौट चुकी होती है। अक्टूबर के आरंभ में बंगाल की खाड़ी के उत्तरी भागों में स्थित हो जाता है तथा नवंबर के शुरु में यह कर्नाटक और तमिलनाडु की ओर बढ़ जाता है। दिसंबर के मध्य तक निम्न वायुदाब का केंद्र प्रायद्वीप से पूरी तरह से हट चुका होता है।

मानसून के निवर्तन की ऋतु में आकाश स्वच्छ हो जाता है और तापमान बढ़ने लगता है। जमीन में अभी भी नमी होती है। उच्च तापमान और आर्द्रता की दशाओं से मौसम कष्टकारी हो जाता है। आमतौर पर इसे 'कार्तिक मास की ऊमस' कहा जाता है। अक्टूबर माह के उत्तरार्ध में तापमान तेजी से गिरने लगता है। तापमान में यह गिरावट उत्तरी भारत में विशेष तौर पर देखी जाती है। मानसून के निवर्तन की ऋतु में मौसम उत्तरी भारत में सूखा होता है, जबकि प्रायद्वीप के पूर्वी भागों में वर्षा होती

Scanned with CamScanner

है। यहाँ अक्टूबर और नवंबर वर्ष के सबसे अधिक वर्षा वाले महीने होते हैं। इस ऋतु की व्यापक वर्षा संबंध चक्रवातीय अवदाबों के मार्गों से है, जो अंडमान समुद्र में पैदा होते हैं और द० प्रायद्वीप के पू० तट को पार करते हैं। ये उष्ण कटिबंधीय चक्रवात अत्यंत विनाशकारी होते हैं। गोदावरी, कृष्णा और अन्य नदियों के घने बसे डेल्टाई प्रदेश इन तूफानों के शिकार बनते हैं। हर साल चक्रवातों से यहाँ आपदा आती है। कुछ चक्रवातीय तूफान प० बंगाल बांग्लादेश और म्यांमार के तट से भी टकराते हैं। कोरोमंडल तट पर होने वाली अधिकांश वर्षा इन्हीं अवदाबों और चक्रवातों से प्राप्त होती है। ऐसे चक्रवातीय तूफान अरब सागर में कम उठते हैं।

भारत की परंपरागत ऋतुएँ

भारतीय परंपरा के अनुसार वर्ष को द्विमासिक छः ऋतुओं में बाँटा जाता है। उत्तरी और मध्य भारत में लोगों द्वारा अपनाए जाने वाले इस ऋतु चक्र का आधार उनका अपना अनुभव और मौसम के घटक प्राचीन काल से चला आया ज्ञान है, लेकिन ऋतुओं की यह व्यवस्था द० भारत की ऋतुओं से मेल नहीं खाती, जहाँ ऋतुओं में थोड़ी भिन्नता पाई जाती है।

ऋतु	भारतीय कैलेंडर के अनुसार महीने	ग्रेगोरियन कैलेंडर के अनुसार महीने
वसंत	चैत्र – वैसाख	मार्च – अप्रैल
ग्रीष्म	ज्येष्ठ – आषाढ़	मई – जून
वर्षा	श्रावण – भाद्र	जुलाई – अगस्त
शरद	आश्विन – कार्तिक	सितंबर – अक्टूबर
हेमंत	मार्गशीष – पौष	नवंबर – दिसंबर
शिशिर	माघ – फाल्गुन	जनवरी – फरवरी

Scanned with CamScanner

वर्षा का वितरण → भारत में औसत वार्षिक वर्षा लगभग 125 cm है, परन्तु इसमें क्षेत्रीय विभिन्नताएं पाई जाती है।

अधिक वर्षा वाले क्षेत्र → अधिक वर्षा पश्चिमी तट, पश्चिमी घाट, उ०-पू० के उच्च-हिमालयी क्षेत्र तथा मेघालय की पहाड़ियों पर होती है। यहाँ वर्षा 200 cm से अधिक होती है। खासी और जयंतिया पहाड़ियों के कुछ भागों में वर्षा 1000 cm से भी अधिक होती है। ब्रह्मपुत्र घाटी तथा निकटवर्ती पहाड़ियों पर वर्षा 200 cm से भी कम होती है।

मध्यम वर्षा के क्षेत्र → गुजरात के द० भाग, पू० तमिलनाडु, ओडिशा सहित उ०-पू० प्रायद्वीप, झारखंड, बिहार, पू० मध्य प्रदेश, उपहिमालय के साथ संलग्न गंगा का उ० मैदान, कछार घाटी और मणिपुर में वर्षा 100-200 cm के बीच होती है।

न्यून वर्षा के क्षेत्र → प० उत्तर प्रदेश, दिल्ली, हरियाणा, पंजाब जम्मू व कश्मीर, पू० राजस्थान, गुजरात तथा दक्कन के पठार पर वर्षा 50-100 cm के बीच होती है

अपर्याप्त वर्षा के क्षेत्र → प्रायद्वीप के कुछ भागों विशेष रूप से आंध्र प्रदेश, कर्नाटक और महाराष्ट्र में, लद्दाख और प० राजस्थान के अधिकतर भागों में 50 cm से कम वर्षा होती है। हिमपात हिमालयी क्षेत्रों तक सीमित रहता है।

वर्षा की परिवर्तिता → भारत की वर्षा का एक विशिष्ट लक्षण उसकी परिवर्तिता है। वर्षा की परिवर्तिता को निम्न सूत्र से ज्ञात किया जाता है —

$$\text{विचरण गुणांक} = \frac{\text{मानक विचलन}}{\text{माध्य}} \times 100$$

विचरण गुणांक का मान वर्षा के माध्य मान से हुए विचलन को दिखाता है।

Scanned with CamScanner

कुछ स्थानों की वार्षिक वर्षा में 20-50 % तक विचलन हो जाता है। विचरण गुणांक के मान भारत में वर्षा की परिवर्तिता को प्रदर्शित करते हैं। 25 % से कम परिवर्तिता प० तट, प० घाट, उ०-पू० प्रायद्वीप, गंगा के पू० मैदान, उ०-पू० भारत, उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश तथा जम्मू और कश्मीर के द०-प० भाग में पाई जाती है। इन क्षेत्रों में वार्षिक वर्षा 100 cm से अधिक होती है। 50% से अधिक परिवर्तिता राजस्थान के प० भाग, जम्मू और कश्मीर के उ० भागों तथा दक्कन के पठार के आंतरिक भागों में पाई जाती है। इन क्षेत्रों में वार्षिक वर्षा 50 cm से कम होती है। भारत के शेष भागों में परिवर्तिता 25-50% तक है। इन क्षेत्रों में वार्षिक वर्षा 50-100cm के बीच होती है।

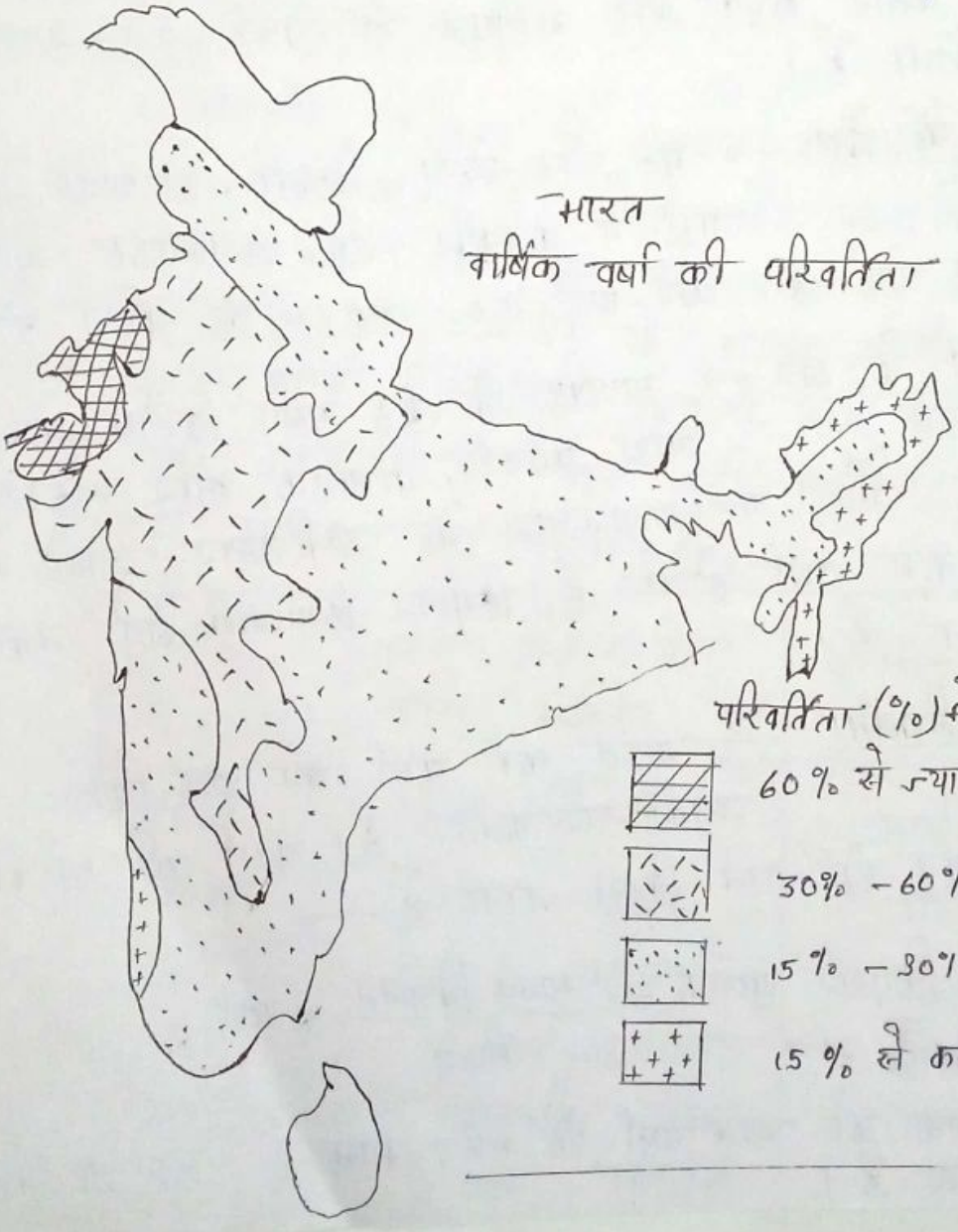

Scanned with CamScanner